



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Times of India	18.02.23	8	7-8

## 'Weed linked to wheat behind virus that stunts paddy'

Kumar Mukesh | TNN

**Hisar:** A team of scientists from the department of plant pathology, Haryana Agricultural University (HAU), engaged in finding out causes of dwarfism in paddy crops (basmati, non-basmati, hybrid etc.), has found that the disease is not only caused by Southern Rice Black Streaked Dwarf Virus (SRBSDV), but also the Rice Gall Dwarf Virus (RGDV).

Information has also been obtained about whom these two viruses, belonging to the spinareoviridae virus group, have made their host.

HAU vice-chancellor professor BR Kamboj said SRBSDV infection has been found more in this disease and this virus has made Pova Anova, a weed of the Rabi season wheat crop, its host which is a matter of concern. There has not been any instance of this virus infecting the wheat crop. Therefore, if the farmer destroys this weed from the wheat crop, the possibility of this disease in the paddy crop next year will almost end. For this, apart from mechanical methods, farmers can also spray weed killer Clodinafop 200 grams and Matribugene 240 grams per acre, VC said.

VC informed that the varsity's plant pathologist, Vinod Kumar Malik, and biotechnologist Shikha Verma

### ADVICE FOR FARMERS

> Avoid early nursery sowing (before 25th May) and early transplanting (before 25th June)

> Protect nursery from hoppers. For this, use recommended insecticides dinotefuran 20% SG/80 gm or pymetrozin 50% WG/120 gm per acre

> Uproot and destroy affected paddy plants immediately or bury them in soil

> Adopt direct-seeding method of paddy cultivation

regions. This has been confirmed by the use of virus-specific primers and molecular studies of the S4, S9 and S10 segments of the virus. University scientists O P Lathwal, Promil, Mahavir Singh, Rakesh Kharb, Ankit Judd, Sumit Saini, Manjunath, Vishal and Amit Kumar are working on the problem of dwarfism in paddy, VC said.

HAU director of research Jeet Ram Sharma said they were regularly studying the path of the virus. Emphasizing on clean farming, Hawa Singh Saharan, head of the department of plant disease, asked for regular cleaning of



चांद्रा यरण १४ दिसंबर २०२३  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भूजी भास्कर	१४.०२.२३	५	१-७

## एचएयू के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर चीफ गेस्ट प्रो. रमेश चंद बोले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 ° की वृद्धि रिकॉर्ड की, जिससे धान-गेहूं फसल की पैदावार में 4.5 से 9% तक की कमी

कहा, जलवायु परिवर्तन के कृषि  
एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं

मास्टर न्यूज़ | हिसार

चौथी चरण सिंह इरियाण कृषि विश्वविद्यालय में "जलवायु परिवर्तन के दूसरे में कृषि से खाद्य सुधार और स्थिरता" विषय पर ३ दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अस्तित्व पर नीति आयोग के सदस्यों और रमेश चंद मुख्य अधिकारी थे, वे नेशनल एशियान कल हायपर एन्ड कॉर्पोरेट (एनएएचईपी) के राष्ट्रीय को-ऑपरेटर डॉ. पी. रामासुदूरम, विश्विविद्यालय अधिकारी जवाक सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के वीसी प्रो. डॉ. आर. कामबोज ने की।

मुख्य अधिकारी प्रो. रमेश चंद ने कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बहुती जनसख्ति जो ज्यादातर कृषि पर निर्भए है, के लिए जलवायु परिवर्तन के द्वारा विनाशी हो सकते हैं। एचएयू 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री मील्डल्यू की बढ़ोतारी रिकॉर्ड की गई है। तापमान बढ़ने, ब्रसाती दिनों की संख्या में कमी व घटने जल स्तर के कारण धन-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9% तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल परिवर्तन लाना बल्कि



एचएयू में सम्मेलन के दैरान पुस्तक का विमोचन करते मुख्यालियति।

जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित बिन्दु बताए

- जलवायु परिवर्तन के कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहाँ एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है, वहीं कृषि जीव प्रणालियों भी जलवायु को प्रभावित कर रहे हैं।
- कृषि क्षेत्र में उत्पादन फसल, किसिम का बुनाव व कृषि परिवर्तनों का सही इलेक्ट्रिक जलवायु परिवर्तन से निपटने में बहुत भूमिका निभा सकता है।
- कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धन की पराली का प्रबोधन, मिल्लेट कफलों की खेती व संकलण खेती की तकनीक का इस्तेमल।
- कृषि क्षेत्र के अपनाकर, फसल विविधकण, योक्षण तत्व प्रबोधन, लेजर लेवलिंग और मूल्य सिनेक्ट को अपनाकर, गुणवत्ताएँ बीज की व्यवस्था व पृष्ठभूम के लिए चारों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारों बैंकों की स्थापना जरूरी है। इस सम्मेलन में डॉ. एस्के. पाहुजा ने आए दूषितियों का स्पाला किया। मंच पर उपर्युक्त जर्नली से प्रो-

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को सीखाने व अन्मवत साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा : डॉ. वी. रामासुदूरम

सम्मेलन के विशेष अधिकारी डॉ. वी. रामासुदूरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खालान एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बाहर रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि ऊरों टिलेज, धन की सीधी विजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील विस्तों को अपनाकर, फसल विविधकण, योक्षण तत्व प्रबोधन, लेजर लेवलिंग और मूल्य सिनेक्ट को अपनाकर, गुणवत्ताएँ बीज की व्यवस्था व पृष्ठभूम के लिए चारों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारों बैंकों की स्थापना जरूरी है। इस सम्मेलन में डॉ. एस्के. पाहुजा ने आए दूषितियों का स्पाला किया। मंच पर उपर्युक्त जर्नली से प्रो-

हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना : प्रो. कामबोज

एचएयू के वीसी प्रो. डॉ. आर. कामबोज ने बताया कि भारत की जलसंकट की कमी का ५४.६ प्रतिशत हिसाब कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कुल जीवीडी में १९.५ प्रतिशत योगदान है। वर्तमान में भारत में कृषि-जलवायन से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरी युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उसमें बताया गया कि जलवायु परिवर्तन विस्तारों व वैज्ञानिकों के लिए उपर्युक्तियों का विकास कर दिया जाए। जलवायु परिवर्तन व उत्पादन व्यवस्थाएँ एक वित्तीय तकनीकी से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों की जीवी योजना का संक्षेप दिया गया। जलवायु परिवर्तन व उत्पादन व्यवस्थाएँ एक वित्तीय तकनीकी से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों की जीवी योजना का संक्षेप दिया गया। योजना का विविधता, रोग-विद्या विकास, फसल विविधकण, योक्षण का भविष्यतीय अवलोकन व विकास फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। एचएयू वैज्ञानिकी व वैद्यकीय विद्यालयों से कृषि व्यवसाय की उत्पादन व उत्पादकता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन है। इसमें पूर्व मुख्यालियत द्वारा कृषि संबंधित प्रबंधनी का अवलोकन किया गया। सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शास्त्रीय विद्यालयों की पूर्वसंस्थान अनुदेशन पुस्तिका का 'कृषि महाविद्यालय' एक नजर में, पुस्तिका का भी विमोचन किया। अंत में स्टाक्कोटोर विजेतारा डॉ. केंद्री शर्मा ने उपर्युक्त अवित्तियों का स्पाला किया। मंच पर उपर्युक्त जर्नली से प्रो-



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१४१५ मार्क्य	१८.०२.२३	५	१-६

वैज्ञानिकों की सलाह • साफ सफाई और ग्रस्त पौधों को उत्थान फेंकने से अन्य पौधों को वायरस के प्रकोप से बचा सकते हैं  
**एचएयू के वैज्ञानिकों की जांच में खुलासा : स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरस के कारण धान की फसल में बौनेपन की थी समस्या**

मासिक न्यूज़ हिसार



खालीक 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी तो एचएयू के वैज्ञानिकों ने इसके निदान की दिशा में काम किया। इसका प्रकाश यांत्री विभाग यानि वायरसों, गैर-वायरसों, रसायन, पौधों आर. में भी देखने को मिला। वैज्ञानिकों द्वारा देखी गई समस्या की विवरणों के बीची गोपनीय योगसंबंध और कानून ने बताया कि धान के पौधों के बौनेपन के पीछे एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसका वायरस ग्राहा। यांत्री सीजन के दूसरे छह महीनों में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानान्तरण होना चिन्ता की बात है। (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व ग्राहा द्वारा देखी गयी ग्राहा जाना आवश्यक है। ग्राहा द्वारा वायरस प्रो. कल्पना ने वैज्ञानिकों से

(आर.जी.डी.वी.) शामिल हैं, जिसके कारण फसल में बौनेपन आती है। इनमें आर.जी.डी.वी. की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसका वायरस ग्राहा। यांत्री सीजन के दूसरे छह महीनों में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का स्थानान्तरण होना चिन्ता की बात है। (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व ग्राहा द्वारा देखी गयी ग्राहा जाना आवश्यक है।

अल्लाहन किया कि इन वायरस के लोटों को निर्विकृत करने की दिशा में कम करें। एचएयू के प्लाट विलोनियर्स डॉ. विनोद कुमार यांत्रिक व वायरोवैरोलॉजिस्ट डॉ. एस.आर.बी.एस.डी.वी. ने न्यूक्रिएट एसडे और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसकी पुरी वायरस के लिए विशिष्ट प्रक्रिया का प्रयोग व

वायरस के एमए.प्सए.व एस10 लोटों के अणक्विक अध्ययनों में हुई। प्रात किए गए न्यूक्रिएट एस.आर.बी.एस.डी.वी. की दिशा में कम करें। एचएयू के प्लाट विलोनियर्स डॉ. विनोद कुमार यांत्रिक व वायरोवैरोलॉजिस्ट डॉ. एस.आर.बी.एस.डी.वी. ने न्यूक्रिएट एसडे और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिति ने अनुसृत किया गया है। वैज्ञानिकों ने अनुसृत किया गया है। वैज्ञानिकों ने एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिति ने अनुसृत किया गया है। वैज्ञानिकों के प्रयोगों की सहाना की

संकल्पना नहीं है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. ओपो. लालवाल, डॉ. प्रेमिल, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. रवीश खर्ब, अंतिन जूल, डॉ. सुभित सैनी, डॉ. बंगुनाथ, डॉ. किशन व डॉ. अमित कुमार धन में अहं बौनेपन की प्रयोग अनोखा में एस.आर.बी.एस.डी.वी. की उपस्थिति ने अमर्या पर काम कर ले हैं। वैज्ञानिकों के प्रयोगों की सहाना की

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जाव की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिति मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी मिला। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हम दिशा में काम कर रहे हैं। पौधे योग विभाग के अध्यक्ष डॉ. हर्वासिंह सहायण ने स्वच्छ खेतों पर जार देते हुए नाली व नेढ़े पर नियमित सफाई करने पर जार दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डॉ. टोडरमल ने बताया कि पेंच पहसुनी फैलिया का खरपतवार है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भैनिल गाँव	18.02.23	5	1-4

### आने वाले समय में नहीं जलेगी पराली, किसानों के सामने होंगे कई विकल्प

जगरण संघरणता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद बतारे मुख्य अतिथि शामिल हुए। उन्होंने जलवायु परिवर्तन पर कहा कि कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बहिक हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बढ़ती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चेतनीय हो सकते हैं।

उन्होंने बताया कि पंजाब और हरियाणा में धान के सीजन में पराली जलाई जाती है मगर सरकार इस दिशा में लगातार काम कर रही है। आने वाले समय में किसानों के पास कई विकल्प होंगे जिससे वह

- हृषि में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर बोले नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद

- किसानों की गलती का खामियाजा किसान ही भूगत रहे, जलवायु परिवर्तन से धान व गेहू की पैदावार में जो प्रतिशत तक कमी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय मेलान मेलान का निरीक्षण करते मुख्य अतिथि नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद, कूलांगी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कार्यालय व अन्य।

पराली का सहुत्योग कर पाएंगे। प्रो. रमेश चंद ने बताया कि किसानों की गलती का खामियाजा खुद किसान भूगत रहे हैं। कलाइमेट चेज साइलेंट फिलर है। पिछले 100 वर्षों में भारत

के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतारी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहू

#### सीखने के लिए मंच प्रदान करेंगे : डा. रामासुंदरम

डा. डी. रामासुंदरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी ज्ञेत वाले किसानों के हितों को व्याप में रखते हुए छोटान् एवं पौधण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि अध्यारित प्रबन्धन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति बहनशील किसानों की अपनाकर, फसल विविधकरण, पोषक तत्व प्रबन्धन, लेजर लैलैण्ड और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, बीज की व्यवस्था व वारे की उपलब्धता सुनिविदत करने के लिए वारा बैकों की स्वापन जरूरी है।

कृषि का उत्पादन बढ़ाना लक्ष्य : प्रो. वीआर कांदोज प्रो. वीआर कांदोज ने बताया कि वर्तमान में भारत में कृषि-खाद्यान से जुड़ी हुई योजनाओं के सम्मेलन दो बुनियादी हैं। एहसान कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व इसका योगाऊ की कृषि व्यवस्था की तरफ आकर्षित करना है। जर्मनी से प्रो. इड्यू बार्नर, कानाडा से प्रो. रविंद्र छिक्कर ने भी व्याख्यान दिये। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व कृषि महाविद्यालय-एक नजर में पुस्तिका का विमोचन किया गया।

फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है।

जलवायु परिवर्तन से ही रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पालिसी लानर बल्कि

कृषकों व आमजन को भी सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि साइंस को फोर्स की नहीं बल्कि प्रकृति के साथ कदमताल करने की



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
१३१ अगस्त २०२३	१४.०२.२३	२	१-५

## धान में बौनेपन की समस्या के कारक दो वायरस खोजे

जागरण संघटना, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हक्कि) वैज्ञानियों ने धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक दो वायरस खोजे हैं। खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई थी, तभी से एचएयू के वैज्ञानिक इस पर काम कर रहे थे। छह महीने मेहनत के बाद वैज्ञानियों ने धान के पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह को खोजा है। इसमें सदन राइस ब्लैक स्ट्रोकड इवार्क वायरस (एसआरबीएसडीबी) व राइस गाल इवार्क वायरस (आरजीडीबी) शामिल हैं जो बीमारी के कारक हैं। इनमें आरजीडीबी की तुलना में एसआरबीएसडीबी का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एसआरबीएसडीबी का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसे शीघ्र रोका जाना आवश्यक है।

- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने छह महीने में दूदा हल

- धान कसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरस

### ऐसे करें फसल का बचाव

खेत में सफेद फूल वाले खरपतवार और सफेद पीठ वाले कीड़े को देखते ही खत्म कर दें। यह वायरस को फैलाने में सहायक है। गोबर रोग विभाग के अध्यक्ष डा. हवासिंह सहारण ने खबर खेती पर जोर देते हुए नाली व मेंढे पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं।

### सफेद फूल वाले खरपतवार को नष्ट कर दें किसान

एचएयू के अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम शर्मा ने बताया कि धान के पौधों में बौनेपन का पता लगाने के लिए विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिति भिन्नी। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं।

### किसानों के लिए सलाह

- अग्रीती नरसी बुवाई (25 मई से पहले) और अग्रीती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।
- नरसी को हापस से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशसित कीटनाशकों डायनोटिप्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम और पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यूजी / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- प्रभावित धान के पौधों को तुरत उखाइकर नष्ट कर दें या मिट्टी में दबा दें। धान की खेती की सीधी बिजाई विधि को अपनाएं।

### इन वैज्ञानिकों की टीम ने किया काम

विश्वविद्यालय के लैब ऐण्टोलजिस्ट डा. विनोद कुमार भट्टलक व बायोटेकोलजिस्ट डा. विजय यशवीर ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। विजय वैज्ञानिक डा. ओपी लक्ष्मण, डा. प्रमिल, डा. महावीर सिंह, डा. राकेश खर्ब, अकिंत जूड, डा. सुमित सेनी, डा. भजुनाथ, डा. विशल व डा. अमित कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
**'उमड़त्ता'**

दिनांक  
**१५.६.२३**

पृष्ठ संख्या  
**२**

कॉलम  
**६४**

### धान की रोपाई के बजाय सीधी बिजाई से बचेगा एक तिहाई पानी, मिथेन गैस का उत्सर्जन घटेगा एचएयू के डॉ. आरके बहल ने कृषि क्षेत्र में बदलाव को वक्त की जरूरत बताया

मार्ह सिटी रिपोर्टर

हिसार। एचएयू में चल अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में हिस्सा लेने आए डॉ. आरके बहल का कहना है कि धान के खेत से जो मिथेन गैस निकलती है, उससे भी जलवायु पर असर होता है। धान की रोपाई के बजाय अगर सीधी बिजाई की जाए तो जहां एक तिहाई पानी की बचत होगी, वहां मिथेन गैस का उत्सर्जन भी कम होगा। खास बात यह है कि इससे धान की उपज पर कोई खास असर नहीं पड़ेगा।

इंटरनेशनल फार्मिंडेशन फॉर मेरिटेनेशन डेवलपमेंट इन अफ्रीकी एशिया के सम्बोधित व एचएयू के कृषि महाविद्यालय के पूर्व डॉन डॉ. आरके बहल जेनेटिक्स के विशेषज्ञ हैं। मूलतः राजस्थान के ब्रिगेनानगर निवासी डॉ. आरके बहल जर्मनी, अमेरिका, जापान समेत अब तक 23 देशों के कृषि विशेषज्ञों के साथ विभिन्न सेमिनार में



डॉ. आरके बहल।

डॉ. आरके बहल ने कहा कि प्राकृतिक खेती को एक साथ सारे किसानों से शुरू करना खातरनाक हो सकता है। दरअसल यह विधि जीवाशम कार्बन की उपलब्धता पर निर्भर है। अगर किसी खेत में लगातार तीन साल तक ग्रासायनिक ऊर्जाकों का प्रयोग नहीं होगा, तब जाकर वहां पर्याप्त जात्रा में जीवाशम कार्बन एकत्रित होगा। इसके बाद जीधे साल की फसल का उत्पादन अच्छा होगा। परन्तु खेती पर निर्भरता इतनी अधिक है कि बार साल तक किसान इतजार नहीं कर सकता। इसलिए बहतर है कि इसे पहले छोटे स्तर पर शुरू कराया जाए। और धीरे इसका शेत्रफल बढ़ाया जाए। खेती की पुरानी विधियाँ पर्यावरण के अनुकूल थीं।

शामिल हो चुके हैं। उन्होंने बताया कि बढ़ती आबादी व खाद्य सुरक्षा में स्थिरता के लिए प्रतिवर्ष अनाजों का 3.76 प्रतिशत उत्पादन बढ़ाना पड़ रहा है। इसके लिए हर फसल में अधिक से अधिक उपज देने वाली प्रजातियों की खोज की जा रही है। जाहिर सी बात है कि अगर उपज बढ़ा तो उस वेराइटी की रोगी प्रतिरोधक क्षमता घटेगी। उदाहरण के तौर पर देखें तो गेहू की सी-591 और सी-306 में रोग प्रतिरोधक क्षमता तो है,

लेकिन उपज कम होने के कारण कम किसान ही इनकी बिजाई करते हैं। इसी तरह धान के खेत में पानी की खपत अधिक होती है, इस बजह से मिथेन गैस भी अधिक निकलती है।

इसलिए धान की रोपाई की जगह सीधी बिजाई की विधि अधिक उपयुक्त है। ऐसा करने पर फसल में एक तिहाई पानी की खपत कम होगी। इसके अलावा मिथेन का उत्सर्जन भी घटेगा। इसी प्रकार कई अन्य उपाय हैं, जिन्हें अपनाना होगा।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अभ्यू उजाला	18.02.23	2	1-5

## 'जलवायु परिवर्तन से बढ़ा 0.6 डिग्री तक तापमान, 9% तक घटी फसल पैदावार'

एचएयू के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद्र ने जताई चिंता

अभ्यू उजाला छ्यूरो

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाड़ी सुरक्षा और स्थिरता विषय पर शुक्रवार को तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ।

बतौर सुख्य अतिथि नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद्र ने कहा कि बीते 100 साल में देश के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ातरी रिकॉर्ड की गई है। तापमान बढ़ने, भारिश के दिनों की संख्या में कमी व घटते जलस्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी आई है। जलवायु परिवर्तन से ही हो दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पालिसी प्लानर बल्कि कृषिको व आप जनता को भी सतत रखने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बल्कि, हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और उनके लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो सकते हैं। क्योंकि जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे से जुड़े हैं। जहाँ एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है।

वहीं कृषि की प्रणालियां जलवायु को प्रभावित कर रही हैं। कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बेहतर भूमिका निभा सकता है। कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का



एचएयू में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में आरके बहल को सम्मानित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी आर कंबोज एवं अन्य।

### छोटे किसानों और पशुओं के चारे के लिए बनाना होगा बैंक : डॉ. रामासुंदरदम

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि व नेशनल एपीकल्यारल हायर एजुकेशन प्रोवेन्ट (एनएचईपी) के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरदम ने कहा कि हरियाणा का पूरे भारत में खाड़ीन उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.93 लाख छोटे व मध्यम किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं। छोटी जीत वाले किसानों के हितों की स्थान में रखने हुए खाड़ीन एवं पेयजल की सुरक्षा व स्थिति का बनाए रखना जरूरी है। कृषि आशारित प्रबंधन तकनीक जैसे जीरो टिलेज, धान की सौधी विजाह, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशोल किसी को अपनाने, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूख मिचाई के उपाय अपनाने होंगे। गुणवत्तापूर्ण जीज और व्यवस्था व पशुधन के लिए चारों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारों बैंकों की स्थापना जरूरी है।

### कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना होगा : प्रो. कंबोज

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शीअर कंबोज ने कहा कि देश में 54.6 प्रतिशत भूमि कृषि से जुड़ी है। देश के कुल जीडीपी में कृषि थेट्र का योगदान 19.9 प्रतिशत है। देश में कृषि-खाड़ीन से जुड़ी हुई योनाओं के सामने कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करने की ज़रूरती है। जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आधी, तुफान, सूखा, बाढ़, असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन में प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु

### डॉ. आरके बहल को सम्मानित किया

इस सम्मेलन में डॉ. एसके पाहुजा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। भूंच पर उपस्थित जर्मनी से प्रो. एंड्रयू बॉर्नर, कनाडा से प्रो. सर्विद्र छिल्कर ने भी व्याख्यान दिए। सम्मेलन में प्रदत्त सोने वाले साध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व 'कृषि महाविद्यालय-एक नजर में' का भी विमोचन किया गया। कृषि महाविद्यालय के रिटार्ड डीन डॉ. आरके बहल को विदेशी वैज्ञानिकों ने सम्मानित किया। स्नातकोत्तर अधिकारी डॉ. केंटी शमा ने उपस्थित अतिथियों का भव्याकाद जताया।

### अचानक बदले मौसम पर जताई चिंता

सुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद्र ने शुक्रवार की सुख्य हुई धूम व बादलवाही का जिक्र करते हुए कहा कि फसलों के लकड़ी गोदान में



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरेस भूमि	18.02.23	१	२-६

हकूमि में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

# जलवायु परिवर्तन खेती के साथ हर घर के बजट को कर रहा प्रभावित

अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा जलवायु परिवर्तन, सहजरील फसलों को अपनाना समय की नींव

हरिहरेन्द्र न्यूज एवं हिसार



हिसार। दीप प्रज्ञवलित करते मुख्यालियि प्रो. रमेश चंद व अन्य।

## पुरितका का विनोदन

जम्मेलज में डॉ. पर्सेक पाहुजा ने आए हुए अंतर्राष्ट्रीय का स्वागत किया। वह उप उपस्थित जम्मेलज ने प्रेरणायांकर, कलाज से प्रेरित विष्वार वे भी व्यवस्था किया। इस अवसर पर जम्मेलज में प्रसन्न होके ताले शेष पर्यावरण की पुरितका, अनुशासन पुरितका व युवा महाविद्यालय-एक जनर ने पुरितका का भी विनोदन किया। अत ने स्वतंत्रता अधिकारी डॉ. केही शब्द ने उपस्थित रठा।

जलवायु परिवर्तन ने केवल कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ अवसर को संबोधित कर रहे थे।

सम्मेलन में नेशनल एशियाकॉल्डरल हायर एजेक्यूटिव (एन.ए.एच.ई.पी.) के राष्ट्रीय को-ऑफिसेन्टर डॉ. पी. गामारंदरम विशिष्ट अधिकारी

बी.आर. काम्बोज ने की। मुख्यालियि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतारी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार

रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पौलिसी प्लानर बल्कि कृषकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है।

## जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े

## खाद्यान्जन व पोषण की सुरक्षा व स्थिरता रखना जरूरी

जम्मेलज के विशिष्ट अंतिम डॉ. डॉ. रामकृष्णराम ने दृढ़ताते जलवायु पर विचार करने हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परियोग में छोटी जीत वहाँ किसानों के हित को खाल में रखते हुए खाद्यान्जन एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बलाप सख्ता जारी है। कृषि अंशादित प्रश्नावल तकनीक जैसे कि जौरी टिलेज, बच वीं सीधी किंवाह, जलवायु परिवर्तन के प्रति अहंकारील तिसों को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पेंजन तत्त्व प्रबोधन, लेजर लेवलीज और स्कूम सिवाई को अपनाकर, तुणकातारूप बीज की व्यवस्था व पशुपालन के लिए वहे वीं उपलब्धता उनिश्चित करने के लिए चारा बैंकों की स्थापना जरूरी है। हरियाणा का पूरे भारत ने आइजल उत्पादन में बूझा रथ लिया। प्रदेश में 1.30 लाख छोटे व जात्यां वर्गीय किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं।

## कन लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना ही लक्ष्य

विश्वविद्यालय के कुलपति व जम्मेलज के संरक्षक प्रे. डॉ.आर.लालबोज ने बताया कि भारत की जात्यांश्या के काम का ५५.६ प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की गुण जीडीपी में १९.९ प्रतिशत बोलाया गया है। वर्तमान में भारत में कृषि-आदान तंत्र जुही तुड़ योजनाओं के साथी दो कृषितात्त्व व्यवस्थाएं की तरफ आकर्षित करना है। उन्हें बताया कि जलवायु परिवर्तन के कामों के लिए एक वित्ती व्यवस्था की जरूरत है। जलवायु परिवर्तन आदि ग्लोबल विनियोग तत्त्व सीमित नहीं रहा, इसके मौजूदा तंत्र आने वाले अंतर्राष्ट्रीय बदलाव तंत्र से अधीनी तूफान, सूखापक व बढ़ी झालायी रहने लगती है। अनुभव तापमान का बढ़ावा कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। जिससे बच्चों के लिए सभी को सम्मतिक प्रधान करने वाले तथा छालने कृषि वैज्ञानिकों की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है।

संबोधित मुख्यविन्दु पर चर्चा करते हुए, कहा कि जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहाँ एक और जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है वही कृषि की प्राकृतिक भी जलवायु को

व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बहुत भूमिका निभा सकता है। कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में महत्वपूर्ण हो सकता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरी भूमि	18.02.23	12	2-6

# ▼ हकूमि के वैज्ञानिकों ने की दो बायरसों की पहचान अब बौने नहीं रहेंगे धान की फसलों के पौधे

हाइकूटी न्यूज़ » डिसार्ट



समूह है जिसमें सदन गड़स ब्लैक स्ट्रीकड इवार्फ बायरस (एस.आर.बी.एस.डी.बी.) व ग्राहस गैल इवार्फ बायरस शामिल हैं, जो बीमारी के कारक है। इनमें आर.जी.डी.बी. की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.बी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया था। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.बी. का स्थानांतरण होना चिंता की

बात है जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से अंति शीघ्र बायरस के स्रोत को निवाप्रित करने की दिशा में काम करें। प्लांट पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मलिक व बायोटैक्नोलॉजिस्ट डॉ. शिखा यशवीर ने न्यूकिलक एसिड और कोट प्रोटीन स्रोतों में बायरस को डिकोड किया है। इसकी पुष्टि बायरस

के लिए विशिष्ट प्राइमरी का प्रयोग बायरस के एस4, एस9 व एस10 खड़ों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूकिलयोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.बी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. हारा अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोका अबोवा में एस.आर.बी.एस.डी.बी. की उपस्थिति पाई है जबकि गेहूं में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की सैब में जांच की, जिसमें दो बायरस की उपस्थिति मिली।

कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम बायरस के पाथ का

### किसानों के लिए सलाह

► धान की अवृत्ति बढ़ती रुपाई (25 जून से पहले) और अवृत्ति रोपाई (25 जून से पहले) से बचे।

► बरसी को होपर्ज ने बचाना सब्दाने जरूरी है। इसके लिए अद्वितीय कॉटिक्सल कॉम्पोटैच्यूरल 20 प्रतिशत पस.जी. / 80 लाम अद्वितीय पाइमेट्रिजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. / 120 लाम प्रति पकड प्रयोग करें।

► प्राप्तिवाल के पौधों की तुरंत अवृद्धि कर नहीं कर दें वा जिन्होंने दें बढ़ा दो।

► धान ती छेती तो सारी किजाई तिथि की अपलब्द।

नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक बायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तीर्ण समाचार	१४.६.२३	५	१-५

# धन फसल में बौनेपन की समस्या के कारण स्पाइनरियोविरिडे समूह के दो वायरस : प्रो. काम्बोज

हिसार, 17 फरवरी (विंदे वर्मा)

खरीफ 2022 के दौरान हरियाणा में धन के पौधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर

बी.आर. काम्बोज ने बताया कि धन के

पौधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनरियोविरिडे वायरस समूह है

जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीकड इंवार्फ

वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.बी.) व राइस गॉल इंवार्फ वायरस

(आर.बी.डी.बी.) शामिल हैं जो

बीमारी के कारक हैं। इनमें

आर.जी.डी.बी. की तुलना में

एस.आर.बी.एस.डी.बी. का संक्रमण

ज्यादा पाया गया है। रक्षी सीजन के

बरपतवार

में एस.आर.बी.एस.डी.बी.

का अनांतरण होना चिंता की बात है



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वायरस खोजने वाली वैज्ञानिकों की टीम के सायर (दाएं) अरपतवार पोवा अनोवा।

विस्का शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आझान किया कि अति शीघ्र वायरस

के स्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करें। विश्वविद्यालय के प्लाट

पैथोलॉजिस्ट डॉ. विनोद कुमार

महिंद्र व चायोटेक्नोलॉजिस्ट डॉ.

शिखा यशवीर ने न्यूकिलक एसिड

और कोट प्रोटीन क्लोरों में वायरस को

डिकोड किया है। इसकी पुष्टि वायरस

के लिए विशिष्ट प्राइमरों का प्रयोग व

वायरस के एस.वे. एस.वे. एस.१०

खोड़ों के आणविक अध्ययनों से हुई है।

प्राप्त किए गए न्यूकिलोटाइड

अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.बी.)

को एस.सी.बी.आई., यू.एस.ए.द्वारा

अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों

ने पौधा अनोवा में

एस.आर.बी.एस.डी.बी.

मेहे पर नियमित सफाई करने पर और दिया,

जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है।

डॉ. टोडरमल ने बताया कि पौधा पोइसी कैमिली का खरपतवार है

जिसे यांत्रिक विधियों के साथ-साथ खरपतवारनाशकों के प्रिश्न

(ब्लोडिनाफोप 200 ग्राम व मैटीरीब्यूजीन 240 ग्राम प्रति एकड़)

से नियंत्रित किया जा सकता है।

किसानों के लिए सलाह :

अग्री नर्सी बुवाई (25 मई से

पहले) और अग्री रोपाई (25 जून से पहले) से बचें। नर्सी को हॉस्पिट

से बचाना सबसे ज़रूरी है। इसके

लिए अनुशासित कौटनाशकों

डायनोटीफ्यूरान 20 प्रतिशत एस.जी.

/ 80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50

प्रतिशत डब्ल्यू.जी. / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें। प्रभावित धान के

पौधों को तुरंत रखाड़ कर नहीं कर दें

या मिट्टी में दबा दें। धान की खेती की

सीधी विजाई विधि को अपनाएं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अग्रीत समाचार	18.2.23	10	6-8

### हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना : डॉ. वी. रामासुन्दरम्

हिसार, 17 फ़रवरी (विंद वर्ष): सम्मेलन के बशिष्ट अंतिष्ठि डॉ. वी. रामासुन्दरम् ने बढ़ाते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेह में छोटी जोत बाले किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए खाद्यान्न एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किसीको को अपनाकर, फसल विविधिकरण, पोषक तत्व प्रबंधन, सैज़र लेकलींग और सूक्ष्म सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारों की उपलब्धता मुनिहित करने के लिए चारों ओर की स्थापना जरूरी है। हरियाणा का पूरे भारत में खाद्यान्न उत्पादन में दूसरा स्थान है। प्रदेश में 1.93 लाख छोटे व मध्यम कर्मी किसान जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं। यह



मुख्यातिथि प्रो. रमेश चंद व अन्य दीप प्रज्ञलित करते हुए।

सम्मेलन अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को आपस में जोड़ने, सीखने व अनुभव साझा करने के लिए मन्च प्रदान करेगा। विश्वविद्यालय के कुलपति व सम्मेलन के संरक्षक प्रो. वी. आर. काम्बोज ने बताया कि भारत की जनसंख्या के काम का 54.6 प्रतिशत हिस्सा कृषि से जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कूल जीडीपी में 19.9 प्रतिशत वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र, का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उत्तम १४२	18.02.2023	-----	-----

हृषि में अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

## जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं: प्रो. रमेश चंद

उत्तम हिन्दू न्यूज नेटवर्क

हिसार/सुखबिंदर कीरत

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से स्खात्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवधिय पर नीति आयोग के मध्यम प्रो. रमेश चंद, पुरुष अतिथि व व नेशनल एंड्रोकाल्चरल हाईट एजुकेशन प्रोजेक्ट (एनएएचईपी) के गुरुत्व को-ऑफिसियल डॉ. पी. गणपात्रदाम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जी आर. काम्होज ने की।

पुरुष अतिथि प्रो. रमेश चंद ने मध्यम में कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि के बढ़ते हर को बढ़ावा देता है। देश की बहुती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि



मुख्यालियि प्रो. रमेश चंद व अन्य दीप प्रज्ञायालित करते हुए।

पर निभार है, कि निये जलवायु परिवर्तन जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों के दुष्प्रभाव चिन्तनीय हो सकते हैं। विशिष्ट 100 वर्षों में भारत के औसत गतावधान में करोब ०.६ डिग्री मील्डियम की बढ़ती रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण शाम-गेहूँ पहाड़न चक्र की पैदावार में ५.५ में ३ प्रतिशत तक की कमी हो गई है।

सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि डॉ. वी. गणपात्रदाम ने बढ़ने जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जोत वाले किसानों के हितों को भ्यान में रखने



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
डॉ. भूमि नं. 125	17.02.2023	-----	-----

## जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद

### • हक्किय में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

डेमोक्रेटिक

फंट

हिसार/पवन सैनी. चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में "जलवायु परिवर्तन के दोनों में कृषि में खाद्य सुरक्षा और स्थिरता" विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अतिथि थे व नेशनल एग्रीकल्चरल हायर एजुकेशन प्रोजेक्ट (ए.ए.एच.ई.पी.) के राष्ट्रीय को-ओर्डिनेटर डॉ. पी. रामासुंदरम, विशिष्ट अतिथि जबकि सम्मेलन की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्होज ने की। मुख्य अतिथि प्रो. रमेश चंद ने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि क्षेत्र को बहुत हर घर के बजट को प्रभावित कर रहा है। देश की बहुती जनसंख्या जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिंतनीय हो मिलते हैं। पिछले 100 वर्षों में



भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतारी रिकार्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की संख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहूँ फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9 प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन में हो रहे दुष्प्रभावों में निपटने के लिए न कबल पांचिसी प्लानर बल्कि कृषिकों व आम जनता को भी सतर्क रहने की जरूरत है। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित मुख्य बिन्दु बताएः

1. जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहां

एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है वहीं कृषि की प्रणालियां भी जलवायु को प्रभावित कर रही हैं।

- कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चुनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बहतर भागीदारी निभा सकता है।
- कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धान की पराली का प्रबंधन, मिल्लेट फसलों की खेती व संरक्षण खेती की तकनीक का इस्तेमाल।
- कृषि में होने वाला निवेश जलवायु को प्रभावित करता है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पार्ट ८ प्र५	17.02.2023	-----	-----

## धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरस: प्रो. काम्बोज

रबी सीजन के खरपतवार में वायरस का स्थानांतरण होना चिंता का विषय



पत्रकारा वार्ता को सम्बोधित करते हुए एचएम कुलपति प्रो. बी. आर. काम्बोज।

### पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 17 फरवरी : खरोफ 2022 के दौरान हरियाणा में धान के पीधों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकोप सभी किस्मों यानि बासमती, गैर-बासमती, संकर, पी.आर. समूह में पाया गया था। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने आज एक प्रैस कॉफ्रेंस करके बताया कि धान के पीधों के बौनेपन के पीछे स्पाइनारियोविरिडे वायरस समूह है जिसमें सदर्न राइस ब्लैक स्ट्रीकड इवार्क वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.बी.) व राइस गॉल इवार्फ वायरस (आर.जी.डी.बी.) शामिल हैं जो चीभारी के कारक हैं। इनमें आर.जी.डी.बी की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.बी. का संक्रमण ज्यादा पाया गया है। रबी सीजन के खरपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.बी. का स्थानांतरण होना चिंता की बात है जिसका शीघ्र रोका जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आव्यान किया कि अति शीघ्र वायरस के स्रोत को नियंत्रित करने की दिशा में काम करे। विश्वविद्यालय के प्लाट ऐथोलोजिस्ट डॉ. विनोद कुमार मालिक व बायोटेक्नोलॉजिस्ट डॉ. शिखा यशवीर ने न्यूकिलक एसिड और कोट प्रोटीन क्षेत्रों में वायरस को डिकोड किया है। इसको पूर्ण वायरस के लिए निश्चिह्न प्राइमरी का प्रयोग व वायरस के एस4, एस9 व एस10 खंडों के आणविक अध्ययनों से हुई है। प्राप्त किए गए न्यूकिलयोटाइड अनुक्रम (एस.आर.बी.एस.डी.बी.) को एन.सी.बी.आई., यू.एस.ए. द्वारा

### किसानों के लिए सलाह

- अगेती नर्सरी बुवाई (25 मई से पहले) और अगेती रोपाई (25 जून से पहले) से बचें।
- नर्सरी को हॉपसर से बचाना सबसे जरूरी है। इसके लिए अनुशासित कीटनाशकों डायनोटीफ्यूरन 20 प्रतिशत एस.जी. / 80 ग्राम अथवा पाइमेट्रोजिन 50 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. / 120 ग्राम प्रति एकड़ प्रयोग करें।
- प्रभावित धान के पीधों को तुरंत उड़ाइ कर न छोड़ दें। या मिट्टी में दबाएं।
- धान की खेती की सीधी विजाइ विधि को अपनाएं।

अनुग्रहित किया गया है। वैज्ञानिकों ने पोवा अनोवा में एस.आर.बी.एस.डी.बी. की उपस्थिति पाई है जबकि गेहूँ में फिलहाल कोई संक्रमण नहीं है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जोत राम शर्मा ने बताया कि विभिन्न नमूनों की लैब में जांच की, जिसमें दो वायरस की उपस्थिति मिली। कुछ नमूनों में सह-संक्रमण भी पाया गया। हम वायरस के पाथ का नियमित अध्ययन कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस संक्रमण को रोकने के लिए हर दिशा में काम कर रहे हैं। पीथ रोग विभाग के अध्यक्ष डॉ. हवासिंह सहारण ने स्वच्छ खेती पर जोर देते हुए नाली व मेढ़े पर नियमित सफाई करने पर जोर दिया, जिससे वायरस के आगे स्थानांतरण को रोका जा सकता है। डॉ. टोहरमल ने बताया कि पोवा पोइसी फैमिली का खरपतवार है जिसे यांत्रिक विधियों के साथ-साथ खरपतवारनशकों का प्रयोग (बनोडिनाफ्टोप 200 ग्राम व मिटोरोब्यूजीन 240 ग्राम प्रति एकड़) से नियंत्रित किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉ. ओ.पी. लाठवाल, डॉ. प्रोमिल, डॉ. महावीर सिंह, डॉ. गंगेश खुर्ब, ऑक्टेंट जूड, डॉ. मुमित सैनी, डॉ. मंजुनाथ, डॉ. विशाल व डॉ. अमित कुमार धान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की सराहना की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठ्यक्रम पत्र	17.02.2023	-----	-----

# परिवार की धुरी है महिलाएं, उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन की जरूरत : संतोष कुमारी

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 17 फरवरी : महिला परिवार को धुरी है। जिस पर हर सदस्य का कार्यभार टिका है। इमलिए हमें हर क्षेत्र में महिलाओं व लड़कियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जो महिला औद्योगिक क्षेत्र में अपना हाथ अज्ञा रही है तो वे उद्यमिता सशक्तिकरण की मिसाल है। ऐसी महिलाओं को अपने उत्पाद को बढ़ाने के लिए नवीनतम तकनीकों के साथ उच्च स्तर की सामग्री का इस्तेमाल करना चाहिए। वे विचार चीधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने कहे। जो गांव दोभी में ईंटिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित ग्रामीण कार्य अनुभव कार्यक्रम के समाप्ति पर मुख्यातिथि के तौर पर भीजूद रही। कार्यक्रम में विशिष्ट



अतिथि गृह-विज्ञान महाविद्यालय की अधिकारी डॉ. मंजू महता ने बताया कि ग्रामीण कार्य अनुभव कार्यक्रम के माध्यम से महिलाओं को अंजित ज्ञान का लाभ उठाना चाहिए। ताकि वे अपने निर्मित उत्पाद को बढ़ा सकें। इसके लिए ऐसी महिलाओं को गृह-विज्ञान महाविद्यालय के साथ तालमेल बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में गृह-विज्ञान महाविद्यालय की डॉ. निशा आर्य, डॉ. बंदना वर्मा, डॉ. इला गानी, डॉ.

बैहतरीन योग की मुद्राओं की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में विभिन्न उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई। साथ ही कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने पर स्वयं सहायता समूह एवं 11 ग्रामीण महिलाओं की सम्मानित भी किया। इस अवसर पर शहीद परिवार से कुलवंत सिंह, जयबीर, तृष्णा बैरोवाल, खुशबू, समाज सेविका केला देवी, विकास गोदारा, शिव उषस्थित थे। गांव के सरपंच आजाद हिंदुस्तानी ने सभी का आभार जताया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दूज समाज	18.02.2023	-----	-----

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों, व शोधार्थियों को सीखने व  
अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा : डॉ. वी. रामासुन्दरम



प्राचीन विद्यालय के बाहर गुरुद्वारा परि-संचय व अन्य।

- जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं। परमेश घट
  - हक्की में अतरराष्ट्रीय सम्झेलन का भारतभ

पाठीज्ञ विजय

हिंदुओं द्वारा यस तिंहारा कृषि विकासकाल में साधारणतया उत्पादन के दौर में कृषि से साधा प्रभाव हो जाता था इस तरह यह एक विशेष अवधारणा का सम्बन्ध है। इस अवधारणा की अवधारणा के दौर में योग्य अधिकारी व व्यवसायक विकासकालमान तथा पूर्ववर्तीन के लकड़ीय वर्षों की अवधारणा के दौर में व्यवसायक, विशेष अधिकारी व व्यवसायक की अवधारणा विकासकाल के विशेष

जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दमाप्रभावों से संबंधित समस्या चिन्ह बताएँ।

- जलशय विद्युतीया व धूमि दोसे एक दोसरे से जुड़ते हैं। जल एवं धूम जलशय विद्युतीया की प्रविलित कर रहे हैं एवं धूम की प्रविलित की प्राप्तिका में अवश्यकीयी हो गयी होती है।
  - धूमि दोसे व उपर्युक्त एकान्त, जिसका क्रमशय व धूमि विद्युतीया का नामी इस्तेमाल जलशय विद्युतीया से निष्ठापने से संबंधित भूमिका नियम नामांकित है।
  - धूमि दोसे व नीतिशासक व्यवस्था का इस्तेमाल जलशय विद्युतीया से निष्ठापने में समाप्त हो नस्तक है एवं इसकी सभी व्यापारी का इस्तेमाल निष्ठापन व्यवस्था की दोस्ती संरचना लाई ही तरीकों का दृष्टिकोण है।
  - धूमि दोसे व नीतिशासक जलशय विद्युतीया की प्रविलित करता है।

तथा चारठ ती बरसे के अन्तर्गत पूर्ववर्त क विवरण में उत्ती लोट वान विवरण के लिए को वाहन में रखत हुए भवित्वान्त एवं योग्य की सूची विवरण को वाहन रखना चाहते हैं।

कुछ अवश्यक व्रतवान वाहन-कंपनी द्वारा की जानी विस्तृत वाहन की सूची विवरण, तात्पुर पत्रवाहन के पास बदलनेवाले फ़िल्मों को अवश्यक, वाहन विवरण करने वाले वर्तमान और वर्षमान विवरण को अवश्यक, तात्पुरवाहन की विवरण वाहन वर्तमान वर्षमान के लिए नयी ओर उत्तराधिक सुनिश्चित वाहन के लिए वाहन देखी और स्थानक जानते हैं। इन्हाँका वाहन देखे वाहन में रखावन

हमारा लक्ष्य कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना; प्रौ. बी. आर. काम्बोज

विविधताएँ के बहुतीय द्वारा समाज के नियन्त्रण में हैं। आप अक्षयक ने कहा है कि भवति की जनसंख्या के बढ़न का 54.6 प्रतिशत विस्तार जनों के जुड़े हुए है। इसका बढ़न की कुनौन विश्व में 19.9 प्रतिशत द्वारा दर्शाया गया है। उद्योग व व्यवसाय में जुड़े हुए लोगोंकी दर समाज के दुर्योगों हैं। इसलिए इन नियमों में जुड़े हुए लोगोंके द्वारा दर्शाया गया है। अन्यथा विविधताएँ के बहुतीय द्वारा समाज के नियन्त्रण में हैं।

लक्षण कि जलाशय विसर्जन के बीच विद्युतिको के लिए एवं जला कर रखा है गया है। जलाशय विसर्जन अपने विभिन्न तरीकों के साथ नियंत्रित की जाता है। इसके लिए विभिन्न अपने विभिन्न तरीकों के साथ नियंत्रित की जाता है। इसके लिए विभिन्न अपने विभिन्न तरीकों के साथ नियंत्रित की जाता है। इसके लिए विभिन्न अपने विभिन्न तरीकों के साथ नियंत्रित की जाता है।

इत्यादि में दूसरा महत्व है। प्रोटोमें 1.93 लाख सेकंड में प्रथम वर्गीकृत किंवद्दन जारी करने वालीन के लाला प्रभावित हुए हैं। यह सम्बोधन



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
द्वितीय संस्करण

दिनांक  
**18.02.2023**

पृष्ठ संख्या

कॉलम

### जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद

**लिखार :** चौधरी चरण सिंह  
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का अध्यार्थ  
कृषि विश्वविद्यालय में  
"जलवायु परिवर्तन के द्वारा में  
भागीरथ के सदस्य और यंग बढ़ते  
कृषि में खाद्य सूखा और मूल्य अंतर्भूत थे तब विज्ञान  
विद्यालय" विषय पर 3 विषयीय  
एवं विषयात्मक सम्मेलन होय।

कम लगात में कृषि का उत्पादन बढ़ाना या युवाओं को  
कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना: प्रो. कामदेव  
विश्वविद्यालय के कृषिविज्ञान के कृषिविज्ञान के भागीरथ और यंग और आर  
काम्बोज ने बताया कि भारत की नवाचाहन के फलम का 54.6 प्रतिशत  
हिस्सा कृषि में जुड़ा हुआ है। कृषि का भारत की कृषि जीवीओं में  
10.9 प्रतिशत योगदान है; विज्ञान में कृषि-व्यवसाय में जुड़ी  
हुई योवाओं के बाबने दो युवीनियाँ हैं। यहां कम लगात में कृषि  
का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ  
आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के बाबने व  
विज्ञानों के लिए एक खिल जाता विषय यह गहरा है। जलवायु  
परिवर्तन जब नवाचाहन विविध तरफ सीमित नहीं होता, इसके विविध में  
उन्हें यांत्रिक विद्यालय वैज्ञानिक और विज्ञान, वृक्षायन, वायु  
द्राघार्दि जीवित है। असमय लक्षण का बहुत कृषि उत्पादन में  
प्रभाव दर्शाता है।

प्रारंभिक (पृष्ठ १, पृष्ठ ११ परी) के  
गार्डीन को अंतिम तर्फ भी  
सम्मुद्रमय विशिष्ट अंतिम  
वर्षीय सम्मेलन की अवधारणा  
विश्वविद्यालय के कृषिविज्ञान के  
एवं विज्ञान की

प्रभावित कर रहा है। दूसरे  
वर्षीय जलवायु की नवाचाहन  
कृषि पर विभाग है, के विषय  
जलवायु परिवर्तन के दृष्टिभूमि  
विज्ञानों ही बदलते हैं। विज्ञान  
100 वर्षों से भारत के विभिन्न  
सम्मेलन में कृषि १८.८ विभिन्न  
विषयों की विवारण-विवाह को  
दर्शाते हैं। विज्ञान बढ़ते, विज्ञानी  
दिनों की विज्ञान में जारी एवं यादवी

जल वायु के कारण भारत में दृष्टिभूमि में विभावन के निया  
परिवर्तन वर्ष की विद्यालय में ५.५ में  
३ प्रतिशत तक की कमी हो गई  
कृषिकों व आम जनता को १  
है। जलवायु परिवर्तन में हो गई  
सतर्कता विकास की विकास है।

**अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विज्ञानियों, व विज्ञानियों को मीटिंग में**

**अनुभव विषय में प्रदान करेगा :** डॉ. वी. वी. रामानन्दाराम  
सम्मेलन के विभिन्न अंतिम तर्फ भी, रामानन्दाराम ने फलों जलवायु  
पर विज्ञान करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में हीटी  
जैत वाले विज्ञानों के लिए को भारत में रखते हुए जलवायु एवं विषय  
जीव सूखा व विवाह को विवाह रखना जरूरी है। कृषि विज्ञानियों द्वारा  
जलवायु परिवर्तन के प्रति सहजीली विज्ञानों को अपनाकर, विज्ञान विश्वविद्यालय,  
विज्ञान विवाह प्रबोधन, नेत्रजी नेत्रजी और मूल्य मिशनरी को अपनाकर,  
गुलबद्दार्पण जीव की व्यवस्था व पशुपान के लिए जैत को उत्पादन का  
मूल्यविश्वास करने के लिए जल विज्ञानों को स्वायत्त जरूरी है। इन्होंना का  
पूरे भारत में जलवायु उत्पादन में दृष्टि न्याय है। प्रोटोल में 1.93 लाख  
प्रति व विवाह विज्ञान विज्ञान जलवायु परिवर्तन के बाबत प्रभावित हुए  
है। यह समीक्षा अंतर्राष्ट्रीय समाज के विज्ञानियों व विज्ञानियों को विवाह  
में जैत विज्ञानों व अनुभव सहज करने के लिए मंथन प्रदान करेगा।





## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम  
भैनि ५ अक्टूबर

दिनांक  
१४.०२.२३

पृष्ठ संख्या.  
५

कॉलम  
१-७

# एचएयू के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के शुभारंभ पर चीफ गेस्ट प्रो. रमेश चंद बोले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब $0.6^{\circ}$ की वृद्धि रिकॉर्ड की, जिससे धान-गेहूं फसल की पैदावार में 4.5 से 9% तक की कमी

कहा, जलवायु परिवर्तन व कृषि  
एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं

भास्कर नव्या | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुकून और स्थिरता' विषय पर ३ दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। इस अम्बर पर नीति आयोग के सदस्य प्रो. रमेश चंद मुख्य अधिकारी थे व नेशनल प्लॉनिंग चलन प्रोजेक्ट (नए एचएयूपी) के गणराज्य को ऑफिसियल डॉ. पी. रामानुजमास, विशिष्ट अधिकारी जनकी सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के वीर्यों प्रो. वी. आर. कामबोज ने की।

मुख्य अधिकारी प्रो. रमेश चंद ने कहा कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि खेतों को बहिक हर घर के बजाए को प्रभावित कर रहा है। वेश की बढ़ती जलवायु जो ज्यादातर कृषि पर निर्भर है, के लिए जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव चिन्होंने हो सकते हैं। पिछले 100 वर्षों में भारत के औसत तापमान में करीब 0.6 डिग्री सेरेंटियम वी बढ़ोतारी रिकॉर्ड की गई है। तापमान बढ़ने, बरसाती दिनों की सांख्या में कमी व घटते जल स्तर के कारण धान-गेहूं फसल चक्र की पैदावार में 4.5 से 9. प्रतिशत तक की कमी हो रही है। जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों से निपटने के लिए न केवल पर्यावरणीय प्राकृति का बल्कि कृषिकों व आम जनता को भी सतके रहने की जरूरत है।



एचएयू में सम्मेलन के दौरान पुस्तक का विमोचन करते मुख्यमंत्री।

जलवायु परिवर्तन के कृषि क्षेत्र में होने वाले दुष्प्रभावों से संबंधित विन्दु बताए

- जलवायु परिवर्तन व कृषि दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जहाँ एक ओर जलवायु परिवर्तन कृषि को प्रभावित कर रहा है, वही कृषि की प्रभावितया भी जलवायु को प्रभावित कर रही है।
- कृषि क्षेत्र में उपयुक्त फसल, किस्म का चनाव व कृषि पद्धतियों का सही इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में बहार धूमिका निभा सकता है।
- कृषि क्षेत्र में नीतीश्वर तकनीक का इस्तेमाल जलवायु परिवर्तन से निपटने में सहायक हो सकता है जैसे धान की प्राकृति का प्रबंधन, मिल्लेट फसलों की उत्तीर्णी व सरकण खेती की तकनीक का इस्तेमाल।
- कृषि में होने वाला निवेश जलवायु को प्रभावित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन वैज्ञानिकों व शोधार्थियों को सीधाने व अनुभव साझा करने के लिए मंच प्रदान करेगा : डा. वी. रामानुजदरम

सम्मेलन के विशेष अधिकारी डा. वी. रामानुजदरम ने बदलते जलवायु पर चर्चा करते हुए बताया कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में छोटी जेत वाले किसानों के हितों के बायन में रखते हुए खाद्यान एवं पोषण की सुरक्षा व स्थिरता को बनाए रखना जरूरी है। कृषि आधारित प्रबंधन तकनीक जैसे कि जीरो टिलेज, धान की सीधी बिजाई, जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील किस्मों को अनानकर, फसल की विविधतरण, पोषक तत्व प्रबंधन, लेजर लेवलिंग और सूखम सिंचाई को अपनाकर, गुणवत्तापूर्ण बीज की व्यवस्था व पशुधन के लिए चारों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए चारों वैज्ञानिकों की सहायता जरूरी है। इस सम्मेलन में डा. एस. कामबोज ने आप्तवाद विमोचन की वीर्यमान प्रस्तुति की जो अक्षरता विमोचन किया गया। सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों की पुस्तिका, अनुसंधान पुस्तिका व 'वीर्यमान विश्वविद्यालय एक नज़र में' पुस्तिका को भी विमोचन किया। अंत में स्नातकोत्तर अधिकारी डा. केंद्री रम्मा ने उपर्युक्त अधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ग्रामस्तु परिपालना	17.02.2023	-----	-----

जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं : प्रो. रमेश चंद





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त दृश्यणा	17.02.2023	-----	-----

## धान में बौनेपन की समरथ्या के कारक स्पाइना रियोविरिडे समूह के दो वायरस : प्रो. काम्बोज

मध्यसंस्कृत वाचना

एस. अर. की एम. जी. बों का व्यापारितारण होना चाहिए की यात्रा है जिसका शीघ्र गोका जाना आवश्यक है। प्रेरि, कल्पनात ने वैद्युतिकों से अलगून किया कि अन्ति शोध व्यापार के गोले को नियंत्रित करने की दिला में काम करें। विद्युतिव्यापार के यहाँ पैदेल्टिव्यापार या विद्युत कृषि भवित्व के व्यापारिकोंनालिकृत या विद्युत व्यापार ने न्यूक्लिनक उभयं और कोट फ्रैटोन दोनों में व्यापार को दिखोत किया है। इसकी पुरी व्यापार के लिए विशिष्ट प्राप्तियाँ का प्रयोग व व्यापार के एम१, एम२ व एम३ तकीं के आवासिक अभ्यासों में हुई है। प्राप किए गए न्यूक्लिन्योडाइट अनुकूल को गच मीं की भाँति, पृथम ए द्वारा अनुकूलित किया गया है। वैद्युतिकों ने प्राप अभ्यास में एम. अर. की एम. जी. बों की उपर्याखीय गोले के उपर्याख गोले में विनाशक कोटु मकान नहीं है। अनुकूलित विद्युत गोले, जीत राम ज्ञानों ने बताया कि विभिन्न वस्तुओं की लेख में जीवं की, जिसमें दो व्यापारकों को उपर्याखीय किया। कृषि वस्तुओं में महं-संक्रमण भी व्याप गया। हम व्यापार के पार का विविधता अभ्यास कर रहे हैं और विद्युतिव्यापार के वैज्ञानिक व्यापार मंडलों को रोकने के लिए हम दिला में काम कर रहे हैं। प्राप गोले विभिन्न के अभ्यास या व्यापारिक व्यापारों ने स्वयं संस्थाएं पर और देश दूर दूरी के मध्ये प्रभावित व्यापारों के स्वयं संस्थाएं पर जीव दिला, जिसमें व्यापार के आगे स्वामतारण को गोला जा सकता है। या टोक्योल ने कहा कि प्राप गोलों के विवाहों का व्यवसाय है जिसे वैज्ञानिक विभिन्नों के स्वयं सम्बंधित व्यापारिकों के विभिन्न कानूनों व व्यापारों के विवाहितारण के वैज्ञानिक हो और पी. सालवान, डा. प्रोफेसर, डा. याकोबर शिंह, डा. रामेश वर्मा, अधिकारी जूड, डा. मुमिन मीरी, डा. पंकजवाल, डा. विजयल स डा. अमित कुमार भान में आई वैज्ञानिकों की व्यापार व्यापार कर रहे हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ट्रैक्टर स्पॉन समाचार	17.02.2023	-----	-----

| हिसार : एचएचयू में जलवायु परिवर्तन पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

— 17 Feb 2023 20:08:15



जलवायु परिवर्तन के बढ़े दूसरे की ओर रहे प्रभावित : पी. रमेश चंद्र  
दिव्यारा, “जलदी किया।” लैंड्रि भूमोत के बहुमय या ग्रीन घट ने जहा है तो जलवायु परिवर्तन के दौर लौटि भैर को बलिक इन घट के बालह लौट दियें जल नहा है। १०१ ये दृढ़ती जलमत्त्व जो बायांनर कृषि दर लिखे हैं, के पिछे जलवायु परिवर्तन के दूसरे दियांगों का बहुत है।

पी. रमेश चंद्र गुरुदार की यहाँ के हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि में घाय सुरक्षा और विवरन विषय पर शुक्र द्वंद्व नीति दियावीय अमरसाहीय लज्जबत्त को सदाचित्र बन रहे थे। इस उद्यमर पर मैशलत एवं कल्याण द्वायार एन्युकेशन फॉर्मेट (एलएएचडीपी) के राष्ट्रीय को ऑडिलेटर डॉ. पी. गामानुदरग्नि विशिष्ट अनियंत्रित रहे जलवायु सम्मेलन की अंग्रेजी भाषा विश्वविद्यालय के कृत्यपालि पी. बी.आर कर्मकाज ने की। मुख्य अधिकारी पी. रमेश चंद्र ने कहा कि विषय 100 वर्षों में भारत के औमंत जलपान के क्षेत्र ०.५ किलो मैत्रिमयम की बढ़ोत्तरी विकास की गई है। मैशलत के विशिष्ट अनियंत्रित डॉ. बी.गामानुदरग्नि ने बायां जलवायु पर चर्चा जरने हुए बायां कि जलवायु परिवर्तन के परिवेश में लौटी जात वासी विवाहों के हितों को उपयोग में रखते हुए साकान वर्ष दीवान वी सुरक्षा व विश्वास को बढ़ावा रखना जरी है।

हरियाणा का पूरे भारत में बायां उन्नाटन में दूसरा न्याय है। पटेल में १३ लाख छाटे व ज्ञान्यम वर्तीय विवाह जलवायु परिवर्तन के कारण प्रभावित हुए हैं। यह मैशलत अन्तर्राष्ट्रीय समर पी. बी.आर कर्मकाज व शोधाविदों द्वारा आयोग में जोड़े गये व अनुभव लाना जाते हैं जिए इच्छा पटाल करेगा।

इस लज्जबत्त में डॉ. रमेश का याहूजा से आग हुये अतिथियों का स्वाक्षरत विषय। इस पर उपस्थित जमीनी जे पी. रमेश द्वारा जलवायु ने पी. रमेश द्विवेदी से भी बायांवान दिया। इस अद्यमर द्वारा मैशलत में यसदूर दूसरे वाले शोध पर्याजों की दृष्टिकोण अनुभवित विविधता व लौटि भूमिकाएँ गहर सजार में दृष्टिकोण द्वारा दिखाया गया।

विश्वविद्यालय सामाजिक नायांदर न्युजल ब्लॉग पर



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी परस्त	17.02.2023	-----	-----

## धान फसल में बौनेपन की समस्या के कारक स्पाइनारियोविरिडे समूह के दो वायरसः प्रो.काम्बोज

रवी सीजन के खरपतवार में वायरस का स्थानांतरण होना चिंता का विषय

सिटी परस्त न्यूज़, हिसार। अग्रिम 2022 के दैशन हरियाणा में धान के फौहों में बौनेपन की समस्या देखी गई। इसका प्रकार सभी किस्मों परिन वायरसी, गो-वायरसी, स्कर, पी.आर. मध्यम में वायरस का चौधरी चाल सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के व्यावहारिक सेक्रेटरी डी.आर. चालहोले ने बताया धान के फौहों के बौनेपन के लिए स्पाइनारियोविरिडे वायरस मध्यम है जिसमें मटने रुक्त और लंबुकड़ दृष्टिकोण वायरस (एस.आर.बी.एस.डी.वी.) व ग्राम गोल इकार्क वायरस (आर.बी.डी.वी.) शामिल हैं। जो बीमारों के कारक है। इनमें आर.बी.डी.वी. की तुलना में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का सफलता ज्ञात फौह गया है। व्ही भीजन के मुत्तपतवार में एस.आर.बी.एस.डी.वी. का महानाशन होना चिंता की बात है जिसका सुनिश्चित जाना आवश्यक है। प्रो. काम्बोज ने वैज्ञानिकों से आङ्कन



कुलपती प्रो. डॉ. भरत काम्बोज वायरस स्पाइने वैज्ञानिकों को टीम के साथ किया कि अगले सीधे वायरस के स्वान को निर्णयित करने की दिशा में काम करें। विश्वविद्यालय के प्लाट एक्सेलनेट डी.एस.ओ. कृषिक. न. वायरसीटनोलॉजीजट डी.एस.ए. प्रोफेसर विजय कुमार गुरुकुमार व डॉ. विजय कुमार गुरुकुमार ने न्यूक्लिक एसिड और कोट प्रोटीन लेवल में वायरस को डिकोड किया है। इसको पुष्ट वायरस के लिए विशिष्ट प्राइमरी का प्रयोग व वायरस के एस.ए.

अनुसंधान निदेशक डा. जीत राम राम ने बताया कि विभिन्न नमूनों की तेज में जाव चौ. जिसमें दो वायरस की उत्थितियाँ मिली। कुल नमूनों में यह-याक्याया भी वायरस गया। इस वायरस के वायरस का निर्णयित अव्यायाम कर रहे हैं और विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वायरस स्कैचर को गंकन के तिरा द्वारा दिया में काम कर रहे हैं। पीछे गोप विभाग के अध्यक्ष डा. इत्यामिह सहायण ने सरल शब्दों पर जोर देते हुए बातों के में पर निर्णयित मध्यम करने पर जोर दिया। जिसमें वायरस के आगे व्यावहारिक की ओर जा सकता है। डा. गोपाल कुमार ने बताया कि योग गोप्यमी वैज्ञानिकों का खुलासा होता है। जिसमें वायरिक विवरणों के साथ-साथ खरपतवारनाशकों के विवरण (कलोडिनाकोप 200 ग्राम व फटोग्लूजीन 240 ग्राम यति एकड़ा) में निर्णीत किया जा सकता है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. ओ.पी.

### विसानों के लिए सलाह

- अप्रैल वसंती दुर्घट (25 बड़े से पालो) और अप्रैल ट्रैप (25 बड़े से छालो) हो जाए।
- बहनी व लैंड से व्यापक लहरी जल्दी है। इसके लिए अवृक्षित लौटवाली ड्राफ्टरीफ्लूव 20 प्रीविट एवं जी.80 ग्राम वायरोट्रिल 50 प्रीतिल ड्राफ्टरीजी.120 ग्राम पुरी एकड़ प्रतिल हो।
- प्रतिवर्ष धान के लैंपों को दूर उद्धर कर नहीं कर देते तो विहृते हो जाते हैं।
- धान की लंते की सीढ़ी डिवर्ट लिंग को अप्रैल।

लकड़ाल व शेंगिन, गु. महाराष्ट्र मिस्र, गु. गुजरात लंबे, अफ्रिका बड़े, गु. मुम्बई में, गु. महाराष्ट्र व विश्वासन व डा. अमित कुमार भान में आई बौनेपन की समस्या पर काम कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के कृतर्थी ने वैज्ञानिकों के प्रयोगों की समर्पण की।